बलविनोद

प्रथम भाग ।

दोहा ।

मधुर २ नवगीत रव मधुरनाम मृदुमोद ।
सुजन गोद बसिबो सदा, बलकृत सुबलविनोद ॥

अर्थात्

जिसमें तरहदार, चोटीले, आशकाने गाने लायक, नये नये बजहदारी के बहुतही मजेदार रंगीली ठुमरी, बिहाग खिमटी, दादरा, लावनी, पुरबी, सावन संबधी कजरी, विवाहादिक उत्सवों में गाने योग्य मङ्गल, आशीर्वादादि कई चाल के ११० नवीन पद काव्यरीत्यनुसार भावपूर्ण गुणों के लक्षण संयुक्त लिखे गये हैं ।

जिसे

अनाथ परगना शेरपुर जि० आरा निवासी चौ० बलदेवप्रसाद सिंह कुर्मी क्षत्रिय ने अतीव परिश्रम से रचना किया ।

॥ काशी ॥

भारतजीवन प्रेस में बाबू श्रीकृष्ण वर्म्मा द्वारा मुद्रित ।

सन् १९१० ई० ।

प्रथम बार १०००] [मूल्य ।)